Education for Peace and Values

शांति एवं मूल्यों के लिए शिक्षा

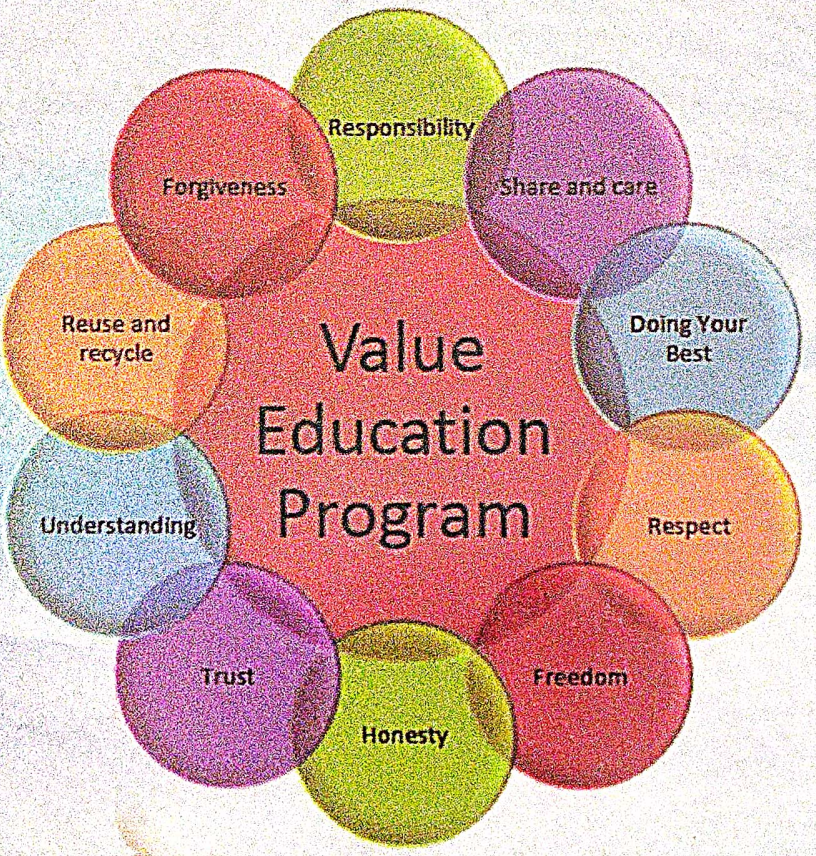

Dr. Chandrakanta Jain

30. मूल्य परक शिक्षा- परिवार एवं विद्यालयों की भूमिका 145
डॉ. हिना खान
31. समकालीन जीवन मूल्य और शिक्षा 148
डॉ. नरेन्द्र सिंह
32. शान्ति की शिक्षा का कक्षा में क्रियान्वयन 153
डॉ. नीलिमा सिंह
33. गाँधीजी की दृष्टि में मूल्य शिक्षा 161
डॉ. रश्मि सिंह
34. शान्ति के लिए शिक्षा 166
डॉ. रेनू सिंह
35. मूल्य शिक्षा एवं अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका 169
डॉ. शकीला खान
36. मूल्य आधारित शिक्षा 172
हृदय नारायण तिवारी
37. नयी पीढ़ी एवं मूल्योंन्मुख शिक्षा 176
डॉ. आद्या षक्ति राय, जयप्रकाश यादव
38. शान्ति एव्म मूल्य शिक्षा के समक्ष चुनौतिया 179
डॉ. कैलाश तिवारी एवं मनीषा श्रीवास्तव
39. शांति एवं मूल्यों की उन्नति में शिक्षक एवं समाज की भूमिका 185
कंचन चौरसिया
40. शांति एवं मूल्य का उद्भव धर्म से 188
मनीष रिछारिया
41. शांति और मूल्यों के समुन्नयन में अध्यापक और समाज की भूमिका 191
ओम प्रकाश गुप्ता
42. शांति एवं मूल्यों के लिए शिक्षा : महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के 198
मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन
राजश्री वैद्य
43. शान्ति एवं मूल्यों के लिए शिक्षा 202
श्रीमति ऋतु तिवारी
44. शान्ति और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक और समाज की भूमिका 207
शिव शंकर सिंह

39

शांति एवं मूल्यों की उन्नति में शिक्षक एवं समाज की भूमिका

कंचन चौरसिया
सहा. प्राध्यापक, ज्ञानवीर इंस्टीट्यूट ऑफ
मैनेजमेंट एण्ड साइंस, सागर

प्रस्तावना:– प्रत्येक समाज का विकास उसी समय सम्भव है जब व्यक्तियों का विकास निरंतर होता रहे, चूंकि व्यक्तियों का विकास केवल शिक्षा के द्वारा ही हो सकता है। इसलिए समाज का कर्तव्य है कि वह समाज में शांति एवं मूल्यपरक शिक्षा की व्यवस्था करें। आज समाज में चारों ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है। समाज में व्याप्त अनुशासनहीनता, श्रमहीनता अशांति को आमंत्रित करती है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षक व समाज अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। बदलते परिवेश ने शिक्षा का व्यापक रूप से व्यवसायीकरण कर दिया है। अतः ऐसी शिक्षा जिसमें डिग्रियों का व्यवसाय होता हैं, अंको का फेर–बदल कोई आम बात प्रतीत हो, वहां नैतिक मूल्यों का पतन स्वाभाविक है। मूल्यों से विहीन शिक्षा, समाज में शांति की स्थापना नहीं कर सकती। ऐसी स्थिति में एक आदर्श शिक्षक, समाज को, अपने आचरण एवं मूल्यों के प्रतिमान स्थापित कर शांति के विरूद्ध उठती आवजों को दबाकर, नवीन मूल्यों की पुनर्स्थापना कर अपनी भूमिका को स्पष्ट करता है।

समाज की भूमिका :– मानव ने अपने लम्बे इतिहास में एक संगठन का निर्माण किया है। इस संगठन में हमें कुछ कार्यों को करने की स्वतंत्रता है, कुछ को करने का निषेध है, कुछ हमारे कर्त्तव्य है, कुछ हमारे अधिकार है। इस संगठन में एक व्यवस्था है जिसमें हमें एक निश्चित प्रकार से रहना और व्यवहार करना पड़ता है। मनुष्यों के जिस संगठन में ये संबंध पाये जाते है, उसी को समाज कहते है। मानव–समाज अपने आदर्शों, मूल्यों तथा क्रियाओं को आने वाली सन्तति को प्रदान करता हुआ स्वंय को जीवित रखता है। समाज शिक्षकों से मरा हुआ है। वे सब जान–बूझकर और चेतन एवं अचेतन रूप में व्यक्तित्व के पूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। समाज की सांस्कृतिक परम्पराओं के निर्माण में पर्याप्त समय लग जाता है। हमारे मूल्यों के पतन में विभिन्न कारण उत्तरदायी है। हमें आने वाली पीढ़ी के मनोभावों को समझना होगा। समाज इस कार्य को